International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 20-05-2023, Accepted: 07-06-2023, Published: 21-06-2023
Volume 5, Issue 2, 2023, Page No. 14-16

नई कहानी में पितृसत्तात्मक विद्रोह का चित्रण

डॉ. ज्ञानी देवी गुप्ता
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो बठिण्डा, पंजाब, भारत

सारांश
साहित्य मे पितृसत्तात्मक विद्रोह अस्मिता की पहचान लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद हिन्दी साहित्य में 'समकालीन साहित्य' विशेष चर्चित रहा है। इस साहित्य में चाहे कथा, उपन्यास हो या फिर कविता सभी में समय के साथ बदलता यथार्थ चित्रण दिखलायी देता है। स्वतंत्रता पूर्व भारतीय समाज–साहित्य पूर्णतः स्वतंत्रता पाने के लिए लालायित था। स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक अस्थिरता का दौर आया। साथ ही बौद्धिक चिंतन में यथार्थ आ गया। स्वतंत्रता के बाद में आम आदमी घुटन, गरीबी, बेरोजगारी और विवशता में जीने के लिए मजबूर रहा है। योजनाएँ फाइलों की संख्या बढ़ाती रही। डार्विन के बाद मानव के विकास की कहानी में बहुत कुछ जुड़ा। हमारे लिए इस कहानी का पहला अध्याय यहाँ जिसे शिकार–संग्रह पितृसत्तात्मक बोध या पुरापाषाण पितृसत्तात्मक बोध के नाम से जाना जाता है। कारण, इस पितृसत्तात्मक बोध में मनुष्य आजीविका के लिए सीध्र प्रकृति पर निर्भर था। वाशबर्न और लैंकेस्टर का मत है कि केवल पुरुष ही शिकार पर जाया करते थे। स्त्रियाँ उनके साथ शरीक नहीं होती थीं।

मूल शब्दः पितृसत्तात्मक बोध, घुटन, आजीविका, अंतविर्रोध, अंदरूनी परिवर्तन

प्रस्तावना

विकास के क्रम में स्त्रियों के शरीर में महत्वपूर्ण अंदरूनी परिवर्तन हुए। इसके अलावा मानव शिशु के अल्पविकसित अवस्था में ही जन्म ले और अपेक्षाकृत निर् उस जरूरत स्त्रियों को बांध–सा दिया था। अन्य अंतविर्रोधों को उन्होंने द्वितीयक और इसलिए आर्थिक वर्ग के खत्म होने के साथ स्वतः मिट जाने लायक माना था। [1]

उच्च जातियों की स्त्रियाँ खुद को निम्न जातियों के पुरुषों से भी श्रेष्ठ स्थिति में पाती हैं। जातिजन्य श्रेष्ठता इन स्त्रियों को निम्न जातियों की स्त्रियों के साथ मिलकर पितृसत्ता के खिलाफ मोर्चा खड़ा करने से रोक देती हैं। इसी तरह, उच्च वर्ग की स्त्रियों और निम्न वर्ग अथवा मजदूर स्त्रियों के हित सांझे नहीं होते।

प्राणी जगत में नारी शब्द नर के समानांतर है। इसका प्रयोग स्त्रीलिंग वाची मादा प्राणियों के प्रतीक रूप मे होता है हिन्दु समाज में 'नारी' शब्द इस सामान्य अर्थ मे गृहीत नहीं है क्योंकि उसका स्थान नर से कही बढ़कर हैं। कोमलता, दृढ़ता, स्नेह आदि गुण नारी में विशेष रूप से पाये जाते हैं। यही नहीं, रूप–आकार, शरीर–गठन, कार्य एंव जीवन यापन की विविध स्थितियों में नारी विधाता की श्रेष्ठतम अनुकृति सिद्ध हुई है। पार्वती, गार्गी, सीता, सावित्री, महारानी लक्ष्मी बाई आदि नारियाँ इन्हीं आदर्शों का प्रमाण है।

भारत देश की स्वतंत्रता के बाद भारत की आर्थिक स्थिति लगातार गिरती चली गई है। आम आदमी अमीर आदमियों के शोषण में पिसत्ता ही चला गया। आम आदमी ऊँचे महलों में रहने वाले लोगों के कारण शोषित बना रहा है। धनी व्यक्ति अपने बुरे कामों पर घमंड करते हैं और गरीब जीने के लिए कसमकस कर रहा है। पैसे की महत्वता इतनी अधिक बढ़ गई है कि मनुष्य, डिस्कोथिक्स, बीयर हाउसेज में ढूंढा जाता है। हमारी इस दृष्टि का एक अन्य कारण है कि तीव्रता से होता जा रहा शहरीकरण। गाँव की बजाय शहरों तक महानगरों में जीवन का बनावटीपन अधिक है। यह सब सुख सुविधाएं कहाँ से उपलब्ध की जा सकती है ? कौन व्यक्ति इन सुविधाओं का अधिकाधिक उपयोग कर सकता है ? यह प्रश्न विचारणीय है। इन सब उनके पैमाने की सुविधाओं का केवल वह व्यक्ति उपयोग कर सकता है जिसके पास अनाप–शनाप पैसा है। ईमानदारी की आय में तो आज एक परिवार को रोटी खिला पाना भी कठिन है। ये सुविधाएं प्रायः उन्ही व्यक्तियों के पास दिखाई देती है जो या तो राजनीतिक नेता या काला बाजारिय है या तस्कर है या जो उत्कोच लेते हैं। गरीब व्यक्ति तो आज भी इन सुविधाओं के नाम भी शायद नहीं जानता। [2]

आज के समय में आर्थिक विषमता इतनी अधिक हो गई है कि प्रत्येक आदमी गलत तरीकों से पैसा कमा कर अमीर बनने की होड़ में लगा हुआ है। गरीबी एक सामाजिक आर्थिक समस्या है। इसे आर्थिक समस्या इसलिए कहा जाता है क्योंकि घनाभाव के कारण ही गरीबी उत्पन्न होती है तथा सामाजिक समस्या इसलिए है, क्योंकि धनाभाव की उत्पन्न दशाएं सामाजिक जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव डालती है। गरीबी का तात्पर्य एक ऐसे अभावग्रस्त जीवन से है जो समाजिक आर्थिक कुसमायोजन से उत्पन्न होता है तथा जिसके फलस्वरूप व्यक्ति अपनी तथा अपने आश्रितों की अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ रहता है।

गरीबी बहुत दुखदाई होती है।लोग अपने पेट को भरने के लिए दूर–दूर के क्षेत्रों में काम की तलाश में चले जाते हैं। रोशनी के लिए शीर्षक कहानी में कर्नाटक के एक गाँव में रहने वाली इंदु का चित्रण करते हुए लेखक स्पष्ट करता है, जिसका नाम इंदु बताया गया था, अधेड़ वय की थी श्याम वर्ण और कमजोर काया रूखा चेहरा बाल और मैले। उसके हाथों में एक–एक चूड़ी थी। शरीर पर कोई गहने नहीं थे। चेहरे पर गहरे विषाद और शोक की छाया थी वह सिर झुकाए और आंखें बंद किए पता नहीं किन विचारों में डूबी थी। उसका लड़का जिसकी उम्र करीब पांच वर्ष, मैली निकर और कमीज पहने था। [3]

अपनी मजबूरी और निर्धनता की वजह से व्यक्ति नंगे पाँव भी चलने को असहाय हो जाता है। चिंगारी कहानी में रुक्को और उसकी बेटी घर से काफी दूर पाँच किलोमीटर तक नंगे पाँव भैरव के मंदिर में पानी भरने के लिए जाती हैं। कहानीकार के शब्दों में– पानी के दो घड़े उसने बड़ी के सिर पर रखे दो पड़े अपने सिर पर रखे। पैरों में चप्पले नहीं थी। बेचारी नंगे पांव, तपती दोपहरी में, तपती पगडंडी पर चली जा रही थी। कैसी तेज गर्मी है सूरज जैसे आग उगल रहा है। पगडंडी हो सकता है तवे की तरह जल रही हो। बच्ची के पैरों में कहीं छाले न पड़ जाएं? इस विचार से यह सिहर गई।

गरीबी मानव जीवन के लिए एक भयानक अभिशाप है। कमलचंद वर्मा की कहानी शहरा जख्म में इसका चित्रण बहुत ही मनोयोग से करते हुए लेखक लिखता है– वह अपनी माँ की हालत देखता था हमेशा एक जोड़ी कपड़ों में दिखाई देती। हफ्ते में एक बार उन्हें धो लती और वापस उन्हीं को पहन लेती। दुःख सहने करते असयम ही चेहरे पर झुर्रिया पड़ गई थी। उसके बापू की हालत अधिक रोब थी। सिर पर चार हाथ की पगड़ी, फटी पुरानी जाकेट और लंगोटीनुमा धोती। पैरों में स्ती चप्पलें, चूसे हुए आम की तरह चेहरा सुबह से शाम तक पत्थर तोड़ने या मिट ने का काम बापू और मां के साथ वह भी काम में जुटा रहता ह्रदय में इस बात शा बंधी थी कि कभी–न–कभी ठेकेदार को दया आएगी। वह उन्हें बंधन मुक्त कर – वे अपने घर, अपने गाँव को लौट जाएँगे। [4]

निर्धनता जीवन के लिए एक बड़ा कलंक साबित होता है। अपनी भूख को मिटाने के लिए स्त्री या पुरुष गंदगी के ढेर में से भी वस्तुओं को खोजते रहते हैं। शनिशाचरश कहानी में लेखक एक जगह स्पष्ट करता है कि– ये स्त्रियाँ हैं, बटोरने आई है, जहाँ कहीं कोई फटा कागज दफती का टुकड़ा, कोई फैंकी हुई चीज पड़ी मिलेगी, उसे झपटकर उटा लेगी और कंधे से लटकते अपने झोले में डाल लेगी, कोई चिगलियां, कोई सुखी लकड़ी के टुकड़े, अधजले कोपले, जो जहां से मिलेगा और पो फटने से पहले ही मोहल्ले में से निकल जाएंगी।

गरीबी से आदमी टूट जाता है और इसे दूर करने के लिए आदमी कुछ भी करने को तैयार हो सकता है। सरेआम कहानी में हरिहर बाबू गरीबी में अपना पेट भरने के लिए मोमजामा बिछाया करते थे। लेकिन एक समय ऐसा आता है जब उसकी इस निर्धनता में वह मोमजामा भी उसका साथ नहीं दे रहा होता। झोले से मुड़ा–तुड़ा कपड़ा निकाल जमीन को पोंछ कर जगह–जगह से खुद की तरह तिरका नीला मोमतामा निकालकर बिछाने लगते हैं। सचमुच कुछ ही कर पाएंगे वे शायद अब वे उसे बदल भी न पाएं। एक ठंडी लकीर धीरे से उनकी रीढ़ में रेंगी है और वे बुझ गए है।

हरीश पाठक के द्वारा लिखी गई 'शहर की मौत' कहानी में लेखक गरीबी से जूझते हुए एक दृश्य को प्रस्तुत करते हुए लिखता है कि, पिता जब रिटायरमेंट के बाद भी परिवार के छह पेटों के लिए रोटी तलाशने दर–बदर साइकिल खटखटाते भटकते थे, तब उसने पाया कि भीतर कहीं माँ की सिसकियां है और बगल में लेटा उसका छोटा भाई हिकारत से उसकी और देखते हुए उदा था और उसकी उपस्थिति को नजरअंदाज कर अपने गंदे कपड़ों को पहनकर रोज बिस्कुट फैक्टरी में जाने लगा था और ये सारी स्थितियाँ जब उसके सामने खुली तो उसने भी एक दैनिक अखबार की नौकरी पकड़ ली थी और कलम घिसने लगा था।... जय महीने में अंत में चश्मा चढ़ाए शर्मा जी ने डेढ़ सौ रूपये उसकी हथेली पर रखे, तो उसे लगा जैसे अचानक रूपये सांप में तब्दील हो गए हैं और हथेली पर सहसा जहर टपक पड़ा है। सपने ज्यादा थे, पैसे कम। [5]

समाजशास्त्र में गरीबी उस अवस्था को कहते हैं, जिससे कोई व्यक्ति या तो अपर्याप्त आमदनी के कारण या विवेकहीन व्यय के कारण अपने जीवन स्तर को इतना ऊंचा नहीं रख पाता जिसके द्वारा उसकी शारीरिक व मानसिकता कायम रह सके और यह अपने तथा अपने आश्रितों के लिए ऐसा स्तर न बनाए रख सके जो उस समाज के स्तर के अनुकूल हो जिसका यह सदस्य है। दूसरे शब्दों में यदि किसी मनुष्य को जीवन की आवश्यकताएँ, सुविधाएँ और मनोरंजन के साधन समुचित परिमाण में उपलब्ध न हो तो उसे हम निर्धन सकते हैं। यह निर्धन है। डॉ. अग्रवाल के अनुसार, एक निर्धन व्यक्ति को उसकी गरीबी के कारण, अतः उसे कम आय मिलती है और यह गरीब बना रहता है। ऐसी स्थिति भारत की अधिकतर जनता जी रही है।

निर्धनता व्यक्ति के लिए एक बड़ा अभिशाप है। कहा भी जाता है कि निर्धनता व्यक्ति से वैसा काम भी करवा सकती है जैसा वह नहीं करना चाहता। ऐसी स्थिति विरुद्ध नामक कहानी के कहानीकार सुदर्शन की है। वह एक कथाकार है और नगर में उसका काफी मान–सम्मान बना हुआ ळें घर में जैसे ही कदम रखा था सोमू की कराहों ने उसे मथ कर रख दिया था। मालती उसके सिरहाने बैठी रो रही थी। सोमू दर्द के मारे छटपटा रहा था। उसकी आँखों में गहरी उदासी पसरी हुई थी। उसे स्थिति समझते देर नहीं लगी, बार–बार वह सोचता रहा कि भेंट रमेश जी के मुँह पर मार आए, पर सोमू की कराहों ने उसे ज्यादा सोचने का मौका ही कहा दिया? क्या इसी दिन के लिए अपने आप को लाया था ? [6]

आधुनिक समय में धन मानव के लिए मुख्य उद्देश्य बन गया है। मनुष्य पैसे कमाने के लिए के गलत से गलत तरीके भी अपनाए जाता है। समाज में एक और धन के अम्बार लगे हैं, तो दूसरी और गरीब आदमी पैसे पैसे को तरसत्ता है, रोटी कमाने के लिए उसे धनी लोगों के तलवे चाटने पड़ते है, उनकी खुशामदी करनी पड़ती है, उनकी ठोकरे खानी पड़ती है। उनकी बेगारे पूरी करनी पड़ती है। आधुनिक पितृसत्तात्मक बोध में, उसका स्तर ऊँचा होना चाहिए। सामाजिक स्तर को ऊंचा बनाए रखने के लिए विवशतः उन्हें रिश्वत लेनी पड़ती है, दोष है हमारी व्यवस्था का है।

सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के कारण ही लोगों का आर्थिक शोषण हो रहा है। आर्थिक शोषण से योग्य और शिक्षित व्यक्ति भी नहीं बच सकते। क्योंकि आज का समय – बापू सुबह पाँच बजे से भी चौधरी की चाकरी के लिए निकल जाते हैं। उन्हें खेतिहर मजदूर कहने की बजाय बंधुआ मजदूर कहना ठीक है। ये चौधरी के खेत के काम के अलावा उनके घर पर भी काम करते थे। सुबह पाँच बजे से लेकर आठ बजे तक उनकी चौकरी में जुटे रहते है। रात को थके हारे लौटते हैं और रोटी खाकर सो जाते हैं। [7]

पैसों की कमी व्यक्ति को एकदम से तोड़ देती है। कर्जा उनके लिए ऐसा मेहमान बन जाता है जो आता तो है लेकिन वापस जाने का नाम नहीं लेता। इस पर व्यक्ति का अनपढ़ होना तो और भी गलत है और यदि उसी व्यक्ति को शराब की बुरी लत लग जाए तो उसका स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो जाता है। यही दशा श्हरा जख्म कहानी में गुंजू के बाप की होती है– उसने कई वर्ष पहले ठेकेदार से कर्ज लिया था।वर्षों वह बराबर किस्तों में कर्ज के रुपए लौटा रहा है। लेकिन ठेकेदार का कहना था कि उस पर दस हजार रूपये कर्ज बाकी है। इसलिए जब तक कर्ज नहीं चुकाता, वह अपनी बीवी–बच्चों के साथ कहीं नहीं जा सकता इसी बात को लेकर ठेकेदार से उसकी नोंक–झोंक रहती है। ठेकेदार उसे गालियाँ बकता, मारने को दौड़ता था, धौंस देता था कि यदि उसने जबरदस्ती जाने की कोशिश की तो जिंदा नहीं बचेगा। भय के कारण उसका बापू चुप रह जाता था। पर डेरे पर ठेकेदार की अनुपस्थिति में उसे बहुत गालियाँ देता था। अपने गाँव अपने घर जाने की बात जोर–जोर से कहता था ठेकेदार के अन्याय और जुल्म की बात खुलकर कहता था। उसे धीरज और दिलासा देते, तब वह चुप होता था। [8]

घर में नोकर रखना एक फैशन–सा हो गया है और नौकर से चौबीस घंटे लेना और कभी–कभी उसे पीट देना उसका आर्थिक शोषण करना भीष्म साहनी की संभल के बाबू कहानी में नायक मैं जब फिल्म देखकर वापस आता है तो नौकर नत्थू दरवाजा खोलने में देर लगा देता है तो उस समय नायक के शब्दों में , उधर दरवाजा खुला, इधर मेरे दाहिने हाथ में गुस्सा लगा दिया और एक ही चमक में पुरजोर घुसा मेरी कमर के पास से उठकर हवा में सनसनाता हुआ सीधे नत्थू के जबड़े पर उतरा। अगर रामू की ओर से प्रतिरोध की आशंका होती तो एक और झापड़

बांई ओर से नत्थू के गाल पर पढ़ने के लिए तैयार था पर आमतौर पर निर्णायक एक ही झापड़ मारते हैं एक ही तूफानी धूल सनसनाता हुआ जमकर बैठा था।

गाँव में पूजीपति धनी व्यक्ति अपना काम करने वाले गरीब लोगों का बहुत शोषण करते हैं। हरीश पाठक के दबा हुआ विद्रोह कहानी में पात्र कौशल के बाबूजी पटेल के घर पर काम करते थे और एक ट्रक दुर्घटना में जब पटेल का गला शहर से जा रहे थे उनके टांगे धड़ से अलग कर दी जाती हैं। कौशल पटेल से कहता है कि, बाऊ, जी इलाज का खर्चा अब आपको ही उठाना पड़ेगा, तो वह भड़क उठा तुम किस मुँह से पैसे माँगते हो, रामरतन जिंदगी भर मेरा कर्ज नहीं सकता। तुम मूल तो छोड़ो ब्याज भी नहीं दे पाओगे, मेरा खुद हुआ है तो ट्रक की माँग रहा है। पटेल की बात पर उसका आक्रश उमड़ पड़ा था, उसे लगा था जैसे विद्रोह का ज्वालामुखी सहसा ही फूट पड़ेगा उसका लाया जहां–जहां छितराया जाएगा और पटेल को करमसात कर देगा लावा फुट पड़ा तुझको निरंतर हमारा शोषण कर रहे हो तुम्हें छोडूंगा नहीं ..... तुम्हारी सब चालाकी जानता हूँ उसकी मुट्ठियां भींच गई थी। सियाराम ने उसे पकड़ लिया थ, ऊपर अटारी से पटेल के लठैत झांकने लगे थे। [9]

निष्कर्ष

मजदूरों का आर्थिक शोषण एक साधारण सी बात हो गई। सरेआम कहानी मे भट्ठा मालिक पालन बाबू के भट्ठे पर काम करते–करते जगनी भट्ठे में झुलस कर मर जाता है और मदन इस बात का कड़ा विरोध करता है तो पालन बाबू के गुठे उसका दिन–दिहाड़े कर देते हैं। कहानीकार के शब्दों में, घर के आस–पास पालन बाबू के लोग मंडराने लगे थे और आए दिन छप्पर के परदों को ये नोचने लगे थे। उस दिन ये स्कूल आकर बैठे ही थे कि पारकी की चीखों ने उसे हिला डाला था। गाँव की भीड़ की शक्त में स्कूल के करीब आने लगा था और वह दृश्य देख हरिहर बाबू कराकर गिर पड़ना चाहते थे। भीड़ में आती पार्वती को ये पूरा देख ही कहाँ जाए थे। सब कुछ पता चला गया था और गाँव वाले मदन की लाश जनार्दन के सिंघाड़े के तालाब से उठा लाए थे। खून से लथपथ मंदन की लाश देखकर उनकी सारी चेतना झनझनाकर टूट गई थी और बूढ़े बरगद की तरह धड़ाम से आंगन में ही वे लेट गए थे।

संदर्भ सूची

1. शोचन्ति जानयो यत्र विनस्यत्यामुान शोचंति तु पगैता वर्धते तहि सर्वदा मनुस्मृति 3,5,7
2. चर्तुवेदी द्वारिका प्रसादः हिन्दी महाभारत अनुशासन पर्व पृ0 66
3. पाण्डेय डॉ0 उषा : हिन्दी साहित्य में नारी पृ0 16
4. भीष्म साहनी, निशाचर (निशाचर), पृ० 61–62
5. हरीश पाठक, शहर की मौत (गुम होता आदमी), पृ० 15–16
6. डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतलंकार समाजशास्त्र के मूल त्तव, पृ० 694–695
7. डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार, समाजशास्त्र, पृ० 665
8. ए.एन. अग्रवाल, भारत का आर्थिक विकास एवं आयोजन, पृ० 17
9. डॉ. सरिता वाशिष्ठ, पितृसत्तात्मक बोध और हिन्दी नाटक, पृ० 227